© 2020 IJSRST | Volume 7 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology
DOI : 10.32628/IJSRST

भारतः चीन संबंध के बदलते आयाम

डॉ0 रविन्द्र कुमार
एम.ए., पीएच.डी. (राजनीति विज्ञान) बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

भारत में सॉफ्ट पॉवर प्राचीन काल से ही कूटनीति का एक प्रमुख उपकरण रहा है और इतिहास में हमें इसके प्रयोग के कई उदाहरण देखने को मिले हैं। भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का विश्वास था कि भारत वैश्विक मामलों में एक बढ़ती और लाभकारी भूमिका निभाने के लिए बाध्य है। उन्होंने एक ऐसी कूटनीति का विकास किया जो 'हॉर्ड पॉवर' के सेन्ज्ञठ और आर्थिक कारकों द्वारा समर्थित नहीं थी। हालांकि इसका सबसे मुख्य कारण था कि उन्हें और संपूर्ण राष्ट्र को गाँधी के अहिंसा के मार्ग पर गर्व था, जिसके माध्यम से हमने आजादी प्राप्त की थी। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में राजनीतिक और सामरिक संबंध महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, परंतु दो राष्ट्रों के मध्य द्विपक्षीय संबंधों से मैत्री का आरंभ होता है तो कई बार ऐसा भी होता है कि राजनीतिक मतभेदों के चलते भी अपने आर्थिक एवं सांस्कृतिक संबंधों को सामान्य बनाये रखने अथवा उनमें सुधार लाना पसंद करते हैं, ऐसा करने पर उनके राजनीतिक एवं सामरिक संबंधों के निर्माण के लिए मार्ग प्रशस्त होता है। कभी–कभी इन संबंधों में गत्यावरोध होने पर सीमा तक सामरिक और राजनीतिक संबंध प्रभावित होते हैं। भारत और चीन के मध्य को आर्थिक, प्रावधिक प्रोधोगिकी एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में जिस प्रकार के सहयोग एवं आदान–प्रदान का विकास है और इन क्षेत्रों में संबंधों निर्माण हुआ।

भारत–चीन संबंधों की पृष्ठभूमि :

- चीनी प्रधानमंत्री झोउ एनलाई ने जून 1954 में भारत का दौरा किया और प्रधानमंत्री नेहरू ने अक्टूबर 1954 में चीन का दौरा किया। प्रधानमंत्री झोउ एनलाई ने जनवरी 1957 और अप्रैल 1960 में फिर से भारत का दौरा किया।
- 1962 में 20 अक्टूबर को हुए भारत–चीन संघर्ष ने द्विपक्षीय संबंधों को गंभीर झटका दिया। अगस्त 1976 में भारत और चीन ने राजदूत संबंध को बहाल किया।
- फरवरी 1979 में तत्कालीन विदेश मंत्री ए बी वाजपेयी की यात्रा की। प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने दिसम्बर 1988 में चीन का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान, दोनों पक्ष सभी क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंधों को विकसित और विस्तारित करने पर सहमत हुए। सीमा प्रश्न पर एक निष्पक्ष, उचित और पारस्परिक रूप से स्वीकार्य समाधान खोजने के लिए–और एक संयुक्त आर्थिक समूह (जेईजी) एक संयुक्त कार्य समूह (जेडब्ल्यूजी) स्थापित करने पर भी सहमति हुई।
- चीनी पक्ष, प्रीमियर ली पेंग ने दिसम्बर 1991 में भारत का दौरा किया। प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव ने सितम्बर 1993 में चीन का दौरा किया। भारत–चीन सीमा क्षेत्र में

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) के साथ शांति और शांति बनाए रखने पर समझौता हुआ। इस यात्रा के दौरान हस्ताक्षर किए गए, दोनों पक्षों को सीमा पर यथास्थिति का सम्मान करने के लिए प्रदान करना, एलएसी को स्पष्ट करना जहां संदेह है और सीबीएम शुरू करना।

- ❖ राष्ट्रपति आर. वेंकटरमन ने मई 1992 में चीन की राजकीय यात्रा की। यह भारत की ओर से चीन की पहली राष्ट्र स्तरीय यात्रा थी।
- ❖ नवम्बर 1996 में राष्ट्रपति जियांग जेमिन की भारत की राजकीय यात्रा इसी तरह पीआरसी के किसी राष्ट्रध्यक्ष द्वारा भारत की पहली यात्रा थी। उनकी यात्रा के दौरान जिन चार समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए, उनमें एलएसी के साथ सैन्य क्षेत्र में सीबीएम पर एक समझौता शामिल था, जिसमें दोनों सेनाओं के बीच आदान–प्रदान बढ़ाने और सहयोग और विश्वास को बढ़ावा देने के लिए ठोस उपायों को अपनाना शामिल था।
- ❖ भारत और चीन के राजनीतिक संबंध विभिन्न तंत्रों द्वारा मजबूत होते हैं। रणनीतिक और विदेश नीति थिंक टैंक के बीच एक करीबी और नियमित संवाद है।

चीन में भारतीय कंपनियां

पिछले कुछ वर्षों में भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार में वृद्धि के साथ, कई भारतीय कंपनियों ने चीन में अपने भारतीय और बहुराष्ट्रीय ग्राहकों दोनों की सेवा के लिए चीनी परिचालन स्थापित करना शुरू कर दिया है। चीन में प्रतिनिधि कार्यालयों, पूर्ण स्वामित्व वाले विदेशी उद्यमों या चीनी कंपनियों के साथ संयुक्त उद्यम के रूप में काम कर रहे भारतीय उद्यम विनिर्माण (फार्मास्युटिकल्स, रिफ्रैक्टरीज, लैमिनेटेड ट्यूब, ऑटो–कंपोनेंट्स, पवन ऊर्जा, आदि) आईटी–सक्षम सेवाओं (सहित) में हैं। आईटी शिक्षा, सॉफ्टवेयर समाधान, और विशिष्ट सॉफ्टवेयर उत्पाद), व्यापार जबकि भारतीय व्यापारिक समुदाय मुख्य रूप से ग्वांगझू और शेनझेन जैसे प्रमुख बंदरगाह शहरों तक ही सीमित है।

भारत में चीन कंपनियां

भारतीय दूतवास के पास उपलब्ध जानकारी के अनुसार लगभग 100 चीनी कंपनियों ने भारत में कार्यालय/संचालन स्थापित किए हैं। मशीनरी और बुनियादी ढांचे के निर्माण के क्षेत्र में कई बड़ी चीनी सरकारी स्वामित्व वाली कंपनियों ने भारत में परियोजनाएं जीती हैं और भारत में परियोजना कार्यालय खोले हैं।

भारत–चीन वित्तीय वार्ता

अप्रैल 2005 में चीनी प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ की भारत यात्रा के दौरान हस्ताक्षरित भारत और चीन के बीच वित्तीय वार्ता के शुभारंभ पर समझौता ज्ञापन के अनुसार, दोनों पक्षों ने तब से सफलतापूर्वक वित्तीय वार्ता आयोजित की है। संवाद के अंत में एक संयुक्त वक्तव्य पर हस्ताक्षर किए गए और उसे जारी किया गया। बातचीत के दौरान, दोनों पक्षों ने वैश्विक

वृहद आर्थिक स्थिति और नीतिगत प्रतिक्रियाओं पर विचारों का आदान–प्रदान किया, जिसमें वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए वर्तमान जोखिमों और संकट के बाद रिकवरी चरण में भारत और चीन की भूमिका का विशेष उल्लेख किया गया है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा प्रणाली में सुधार और मजबूत, टिकाऊ और संतुलित विकास के लिए रूपरेखा सहित जी20 मुद्दों पर चर्चा हुई।

निष्कर्ष :

भारत के मृदु शक्ति के रूप में आध्यात्मिकता, योग, दर्शन, धर्म आदि के साथ–साथ अहिंसा, लोकतांत्रिक विचार आदि। भारत वैश्विक महामारी से निपटने के लिए आपसी सहयोग समन्वय एवं सहभागिता के रूप में अपने 'मृदु शक्ति' के प्रयोग का सबसे अच्छा उदाहरण है, जिसका उद्देश्य विकास के नाम पर छोटे राष्ट्रों को चीन पर निर्भर बनाना है ताकि वे चीन की नीतियों का समर्थन करें। अतः इस दृष्टि से भारत और चीन के मध्य आपसी विवाद को कम किया जा सकता है।

संदर्भ सूची :

1. वार्षिक रिपोर्ट (1991–92) विदेशमंत्रालय भारत सरकार, दिल्ली
2. खन्ना, एन.एन., अरोड़ा, लिपांक्षी एवं कुमार लैसली (2006) : भारत की विदेश नीति, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. ली. दत्त, वी.पी. : इंडिया फारेन पॉलिसी सिंह इंडिपेंडेंस, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
3. वही पृष्ठ।
4. मिश्रा, केश्व एवं भारद्वाज (2016) प्रवीण, बीसवीं सदी में भारत–चीन संबंध प्रकाशक : जेननेक्सट, नई दिल्ली।
5. वर्मा, डॉ. संजय कुमार (2020) : भारत–चीन संबंध बदलता परिदृष्य प्रकाशक : इवीनसेपब, दिल्ली